Unit- 1 (a)

बाल - विकास : प्रकृति, महत्व और समस्याएँ

बाल - विकास :-

विकास एक सार्वभौमिक एवं सतत प्रक्रिया है जो जगत के प्रत्येक जीव में पाई जाती है। यह जीवन के प्रारम्भ अर्थात गर्भधारण से जीवन के अन्त अर्थात मृत्यु तक चलती है। मानव विकास का अध्ययन मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। विकासात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानव विकास का अध्ययन किया जाता है। किशोरा-वस्था तक के विकास का अध्ययन मनोविज्ञान की जिस शाखा के अन्तर्गत किया जाता है उसे बाल विकास के नाम से जाना जाता है।

बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान का अर्थ एवम् परिभाषा :-

आजकल कई मनोवैज्ञानिक बाल मनोविज्ञान के समान 'बाल-विकास' शब्द का प्रयोग करते हैं, बाल मनोविज्ञान गर्भकाल से परिपक्वावस्था तक व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

प्राचार्य
मारा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
डेयपुर, बलिया

जिन मनोवैज्ञानिकों ने इसे बालविकास कहा है, उन्होंने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है :-

(1) मुसन, कोंगर तथा कगन के अनुसार :-
"बाल-विकास के अनेक अध्ययनों का आयु प्रवृत्ति की तरफ है। यह आयु सम्बन्धी अध्ययन, चिन्तन, समस्या समाधान, सृजनशीलता, नैतिकता, व्यवहार तथा अभिवृत्तियाँ आदि के क्षेत्रों में किए जाते हैं, बाल-विकास में सबसे अधिक अनुसन्धान विकास-परिवर्तन सम्बन्धी प्रक्रियाओं पर हो रहे हैं अर्थात् यह ज्ञात करने का प्रयत्न किया जा रहा है कि विकास से सम्बन्धित परिवर्तन किस प्रकार और किन कारणों से हो रहे हैं।"

(2) एलिजाबेथ हरलॉक के अनुसार :-
" बाल-विकास में प्रमुख रूप से बालक के स्वरूप, व्यवहार, रुचियों और उद्देश्यों में होने वाले उन परिवर्तनों के अनुसन्धान पर बल दिया जाता है जो उसके एक विकास काल से दूसरे विकास काल में प्रवेश करते समय होते हैं। बाल-विकास में जानने की कोशिश भी की जाती है कि ये परिवर्तन कब होते हैं, और क्यों होते हैं तथा ये व्यक्तिगत हैं अथवा सार्वभौमिक

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

बाल मनोविज्ञान का अर्थ :-

बाल मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ है, बालकों के मन का अध्ययन। बालको के मन का अध्ययन - इससे स्थिति स्पष्ट नहीं होती है, बालको के मन का अध्ययन कैसे किया जाए? बालको और बालिकाओं की दैहिक चेष्टाएँ दैहिक क्रियाएँ दैहिक गतिविधियाँ आदि ऐसी वस्तु है जिसके द्वारा बालको के मन तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है।

मनोवैज्ञानिकों और शिक्षा - शास्त्रियों ने किशोरावस्था तक की अवधि को बाल्यकाल में गिना है। इस दृष्टि से हम कह सकते है कि "जन्म से किशोरावस्था तक बालकों और बालिकाओं की शारीरिक चेष्टाओं शारीरिक क्रियाओं तथा शारीरिक गतिविधियों द्वारा उनके मन का जो अध्ययन किया जाता है, वही बाल मनोविज्ञान है।"

बाल - मनोविज्ञान की परिभाषा :-

बाल मनोविज्ञान की परिभाषा भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा भिन्न-भिन्न दि गई है।

(1) क्रो तथा क्रो के अनुसार :-

"बाल मनोविज्ञान व्यक्ति के विकास का वह वैज्ञानिक अध्ययन है जो

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

गर्भकाल के प्रारम्भ से किशोरावस्था के प्रारम्भिक काल तक किया जाता है।"

जेम्स ड्रेवर के अनुसार :-

"बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से परिपक्वावस्था तक विकासशील मानव का अध्ययन किया जाता है।"

निष्कर्ष :-

बाल मनोविज्ञान या बाल विकास में यह ज्ञात किया जाता है कि एक विकासावस्था से दूसरी विकासावस्था तक क्या-क्या परिवर्तन होते हैं, ये परिवर्तन कब होते हैं तथा ये परिवर्तन किन कारणों से होते हैं।

बाल मनोविज्ञान का नाम बाल विकास में इस बात पर बल देने के लिए परिवर्तित हो गया कि अब विकास के पक्षों की अपेक्षा बाल विकास के प्रतिरूप को केन्द्र माना जाने लगा है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बाल मनोविज्ञान से बाल विकास अधिक व्यापक प्रत्यय है। बाल विकास शब्द का उपयोग बाल मनोविज्ञान में बढ़ते हुए क्षेत्र के कारण प्रारम्भ हुआ।

19/09/2020
प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया